शुष्क प्रदेशों में जल संसाधन व उनका महत्तम उपयोग - एन.एम.सदगुरू जल व विकास संस्थान दाहोद (गुजरात) का एक प्रयास

डा. स्वाति संवत्सर

टाटा फेलों , एन.एम.सदगुरू जल व विकास संस्थान, दाहोद (गुजरात)

सारांश

दाहोद जिला गुजरात राज्य के पूर्वी भाग में स्थित है । यह पश्चिम दिशा में पंचमहाल जिले गुजरात से उत्तर दिशा में बांसवाड़ा (राजस्थान) पूर्व में झाबुआ जिला म.प्र. व दक्षिण में बड़ौदा से घिरा हुआ है । जिला का कुल भौगोलिक विस्तार 3,6327799 हेक्टेयर है । जनसंख्या 1,636,433 है जिसमें से कि 1480110 अर्थात - 90.44 प्रतिशत जनता गांवों में निवास करती है । जिसमें से 1136359 ग्रामीण, आदिवासी समाज के हैं जो कि करीबन 77 प्रतिशत होते हैं । यहाँ पर गुख्यतया भील व उसकी उप जाति के आदिवासी निवास करते हैं । यह जिला 20 30ऱ्र से 23ऱ्र 30ऱ्र उत्तरी अक्षांक्ष व 74ऱ्र 15= से 70ऱ्र 30ऱ्र पूर्वी देशांस तक सर्मित है । मुगल बादशाह औरंगजेब का जन्म दाहोद में हुआ था ।

1.0 मौसम

यह अर्ध्द्र शुष्क प्रदेशों का भाग है जहां कि वर्षा औसत 799.70 मि.मी. है । यह सुखा प्रभावित क्षेत्र है और हर तीसरे वर्ष सुखा संभवित होता है । यहां की मिट्टी कि उर्वरकता मध्यम से निम्न स्तर की है --

जमीन का प्रकार (000 हैक्टेयर में)

कुल विस्तार	:	366.277
कृषि भूमि	:	207.95
कृषि योग्य पड़तर जमीन	:	24.25
कृषि के लिए अयोग्य जमीन	:	44.93
जंगल	:	86.15

2.0 नदियाँ

काली, पानम, मही, हडफ, कबुतरी, खान, दूधीमत्यि

अधिकांश नदियाँ मौसमी जल का वहन करती है । ज्यादा बारिश हो तो बाढ़ का खतरा पैदा करती है लेकिन अगर इन नदियों पर छोट या मध्यम आकार के चेक डेम बना दिया जाए तो यही नदियां मौसमी स्वभाव को छोड़कर वार्षिक नदी में परिवर्तित हो सकती है । सदगुरू संस्थ द्वारा विगत 33 वर्षो में कई चेक डेम बनाए है जिससे कई नदियों में पानी मानसून के बाद भी कई महीनों तक रहता है ।

3.0 कार्यप्राणी

पानी बिन सब सून यह कहावत शुष्क प्रदेशों के लिए शाप है चूंकि पानी के संरक्षण की आवधारणा धीरे-धीरे मजबूत हो रही है । यह शुष्क प्रदेशों का साफ पानी संरक्षण द्वारा वरदान साबित हो सकता है । संपूर्ण भरत वर्ष में कई संस्थाए यह कार्य कर रही है । दाहोद जिले में यह कार्य सदगुरू जल व विकास संस्थान द्वारा किया जा रहा है । करीबन 33 वर्षो के अथक प्रयासों से दाहोद जिले के कई गांवों में पानी की उपलब्धता हमेशा के लिए बनी है । कृषि प्रधान समाज के लिए पानी जैसा कोई वरदान नहीं अगर पानी बारह मास बना रहे तो कृषि के अलावा कई अन्य कार्य किये जा सकते हैं । जैसे फल व फूलों की खेती, नकदी फसलों की खेती पशुपालन व मत्स्य पालन इत्यादि ।

पानी संरक्षण के लिए सबसे जरूरी है बहते पानी को रोकना और उस रूके पानी का उपयोग खेती व पशुपालन के लिए करना, विगत 33 वर्षो द्वासरा में संपन्न कामों को लेखा लोखा इस प्रकार है ।

कार्य का नाम	संख्या	विस्तार एकड़ में	लाभान्वित	
			परिवार	सदस्य
जल संरक्षक हेतु चेक डेम का निर्माण	306	40,979	20968	1,25808

यह चेकडेम जिले में उपस्थित सभी नदियों व कोतर पर बने है । जहाँ यह बांध बने हैंवहां बांध बनने से पहीले सिर्फग वर्षा आधारित खेती होती थी लेकिन पानी की उपलब्धता के कासरण वहां पर रबी की फसल भी ली जा रही है एवं कई स्थानों पर गर्मी की फसल भी ली जा रहि है । कई स्थानों पर पानी का बंटवासरा सामुदायाक उदवहन सिंचाई मंडल द्वारा किया जाता है । अगर चेकडेम बनेंगे तो पानी रूकेगा अगर पानी रूका रहेगा तो आसपास के कुंआ में पानी का स्तर भी बढेगा । कुओं मे पानी का स्तर वाटरशेड विकास द्वारा भी होता है । अगर दोनों काम एक साथ किए जाए तो पानी की उपलब्धता एक गांरटी है ।

जब छोटी-छोटी नदियों में पानी की उपलब्धता बढ़ेगी तो खेती का विस्तार मुख्यतया, रबी व गर्मी की फसल के लिए बढ़ेगा । चूंकि पानी एक सार्वजनिक और प्राकृतिक स्त्रोत है और अगर सभी गांव वाले इसका उपयोग चाहते हैं तो सबसे जरूरी है ग्रामीण की अपनी संस्थ जो कि इसके उपयोग के लिए नियम बनाए और

उसे सुचारू रूप से चलने में सदगुरू के प्रयासों से जल उद्वहन योजना द्वारा अब तक करीबन 20968 परिवार लाभ ले चुके हैं ।

कार्यक्रम	संख्या	सिंचाई का विस्तार एकड में	लाभान्वित	
			परिवार	सदस्य
सामुदायिक जल उदवहन योजना	296	40979	20968	1,25808

अधिकतर सामुदायिक जल उदवहन योजना सुचारू रूप से चल रही है इससे रबी के लिए खेती का विस्तार तो हुआ ही है साथ ही उत्वादनप भी बढा हैं कई खेतों में जहाँ सिर्फ वर्षा आधारित खरीफ की फसले ली जाती थी आज रबी फसलों के लिए भी सिंचाई की सुविधा है अब यहां पर गेहूं में चार या पांच सिंचाई संभव है उसी प्रकार चना जो कि अधिकांशतया सिर्फ मिट्टी की आर्द्रता के भरोसे था अब दो सिंचाई के साथ उत्पादन में कई गुना बढ़ोतरी कर गया है ।

कई स्थानों पर तो ग्रीष्म ऋतु में भी मकई की खेती हो रही है साथ ही में सब्जियां भी उगाई जाती है । कुछ चुनिंदा स्थानों पर चौथी फसल की भी योजना है चूंकि शुष्क प्रदेशों में ग्रीष्म त्रतु में चारे की कमी होती हैं । अतः सामाजिक कारणों की वजह से ग्रामीण लोग फसल लेने में हिच किचाते है ।

कुएं का पुर्न जीवन करना खेती व पीने की पानी की समस्या का हल है । कई बार खेतों के आसपास कोइ नदी या कोतर नहीं होता है और सिर्फ कुऐं ही सहारा होते हैं ऐसे स्थानों पर कुओं का जलस्तर शीघ्रता से कम हो जाए या बिल्कुल सूखा हो जाए तो पीने की पानी की भी समस्या हो जाती है ऐसी स्थिति में औसतम महिलाओं को 2-3 किमी. दूर से पानी लाना पड़ता है ।

कुंए का पुर्नभरण इस समस्या का हल है । सदगुरू संस्था द्वारा अब तक करीबन 27,637 कुंओं को पुर्नजीवित किया गया है जिससे यह पानी खेती व खेती से जुडे अन्य व्यवसाय के लिए उपयोगी हुआ ।

कुंए की संख्या पुर्नभरण	विस्तार एकड में	लाभान्वित	
		परिवार	सदस्य
27,637	36156	29.071	1,63908

शुष्क प्रदेशों का सबसे दुखद पहलु है वृक्षों की कटाई या जंगलों का सिकुडना ।

जंगलों की कटाई का मुख्य कारण इमरती लकडी चराई व औषधीय वनस्पतियों का जंगल से दोहन है । चूंकि जंगल की स्थिति इस जिले में काफी चिंताजनक है । लेकिन चूंकि सदगुरू संस्था के वृक्षारोपण कार्यक्रम के फलस्वरूप कई हजार वृक्ष लागए गए जो कि बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं ।

सामाजिक वनीकरण में वृक्षों की संख्या	विस्तार	लाभान्वित	
		परिवार	सदस्य
529	79,929	79877	4,79,262

कार्यक्षेत्र में पादपों मृत्युदर 10 प्रतिशत से भी कम है क्योंकि पानी की उपलब्धता है ।

वर्ष आधारित खेती के बाद सिंचाई आधारित खेती करने के पश्चता भी ग्रमीणों के उत्साह वा पानी की उपलब्धता को देखते हुए फलों की खेती की अवधारण लिया मुख्यतय आम, आँवला, नींबू, चीकू, पपीता, अनार लगाए गए । इनके उत्पादन से जहां आवक बढी वहीं पर खानें में पो ठीकता भी बढी कई वाडीयों में टिपक सिंचाई योजना भी लगाई गई जो कि मुख्यतया महिलाओं द्वारा संचालित है ।

फूल वृक्षों की संख्या	**विस्तार एकड में**	**लाभान्वित**	
		परिवार	**सदस्य**
20,055	10,219	19,800	1,18,800

महिलाओं द्वारा संचालित अन्य मुख्य गतिविधि है फूलों की खेती शुष्क प्रदेशों में पूलों की खेती एक स्वप्न की तरह लगती है लेकिन आदिवासी महिलाओं ने उस स्वप्न को पूरा किया है फूलों की खेती मुख्यतया 0.2 हेक्टेयर में करते हैं जिससे कि मुख्य फसल की खेती भी होती रहे, और साथ में आय में कुछ बढ़ोतरी भी।

सदगुरू संस्थ की यह मान्यता है कि शुष्क प्रदेशों के आदिवासी समाज के विकास की पहल सीढी है पानी की उपलबधता ।

अगर पानी है तो जमीन उपज देने लायक हो सकती है । यही स्थिति अगर साल भर चलती रहे अर्थात पानी की उपलब्धता बनी रहे तो रबी की फसल के साथ में गर्मी की फसल भी ली जा सकती है ।

पानी की वजह से ही शुष्क प्रदेशों में भी फूलों की खेती संभव हुई है और कई महिलाएं गुलाब की खेती करके 0.2 हेक्टयर से 22000 से 87000 रूपये प्रत्येक सीजन में कमाते हैं ।

सदगुय संस्था के एकीकृत कार्यक्रम से कई आदिवासी जो कि गरीबी रेखा से नीचे थें अब गरीबी रेखा को पार कर करीबन 6 लाख वार्षिक कमा रहे हैं ।

किसान का नाम	कार्य	आय
	नर्सरी	470000
	जैविक खातर	150000
	गुलाब जल	22000
	कुल	**642000**
किसान का नाम	**कार्य**	**आय**
	खेती	25000
	आम	20000
	दूध उत्पादन	84248
	कुल	**129240**

ऐसे कई उदाहरण है जो कि दर्शाते हैं कि अगर पानी है और पानी का उचित उपयोग किया जाए तो शुष्क प्रदेश काप अभिशाप, वरदान से परिवर्तित हो सकता है लेकिन इसके लिए जरूरी है संयम व एक सोच ।

संदर्भ

एन.एम.सदगुरू जल विकास संस्थान पत्रक 2007.

दाहोद जिले की सामान्य माहिती कलेक्टर एंव जिला कलेक्टर व मजिस्ट्रेट कचेरी दाहोद जिला ।

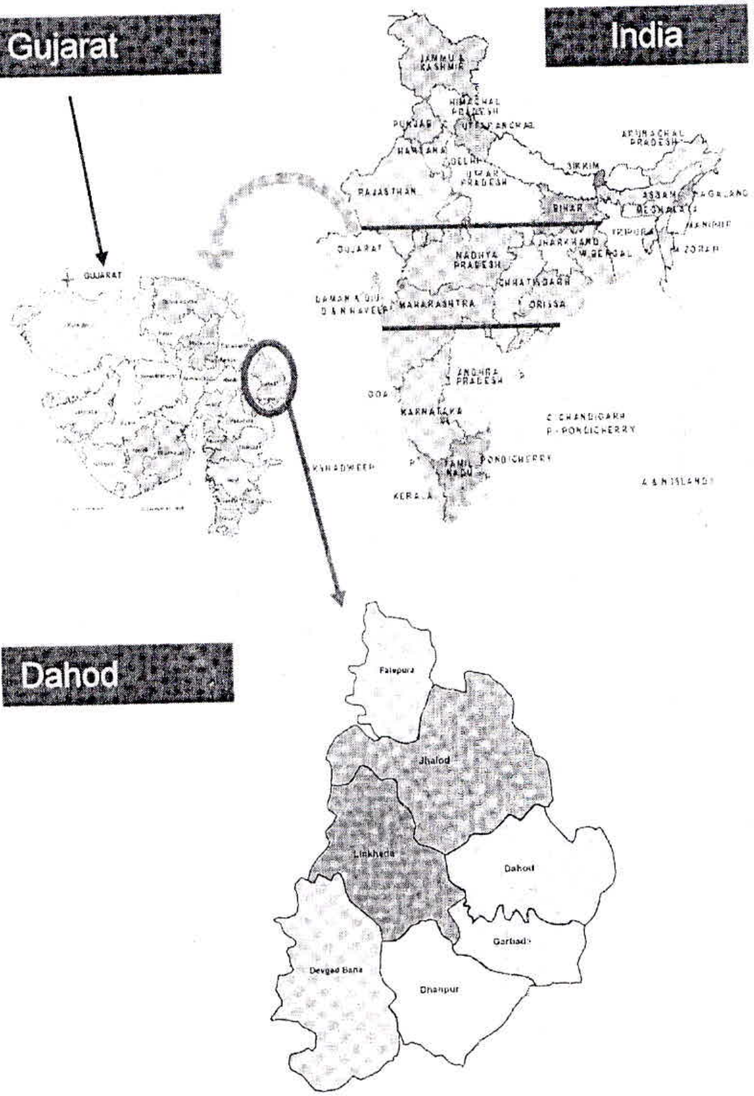
Gujarat
India
Dahod
JAMMU & KASHMIR
HIMACHAL PRADESH
PUNJAB
HARYANA
DELHI
RAJASTHAN
UTTAR PRADESH
SIKKIM
ARUNACHAL PRADESH
ASSAM
BIHAR
GUJARAT
MADHYA PRADESH
JHARKHAND
W. BENGAL
CHHATTISGARH
MAHARASHTRA
ORISSA
GOA
ANDHRA PRADESH
KARNATAKA
TAMIL NADU
KERALA
PONDICHERRY
Fatepura
Jhalod
Limkheda
Dahod
Dhanpur